Dr Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H D Jain College, Ara
M.A - II Sem. Philosophy
CC-09 - Indian Linguistic trends

"स्फोट" का वर्गीकरण

नागेश भट्ट ने आठ प्रकार के स्फोट का उल्लेख किया है :-

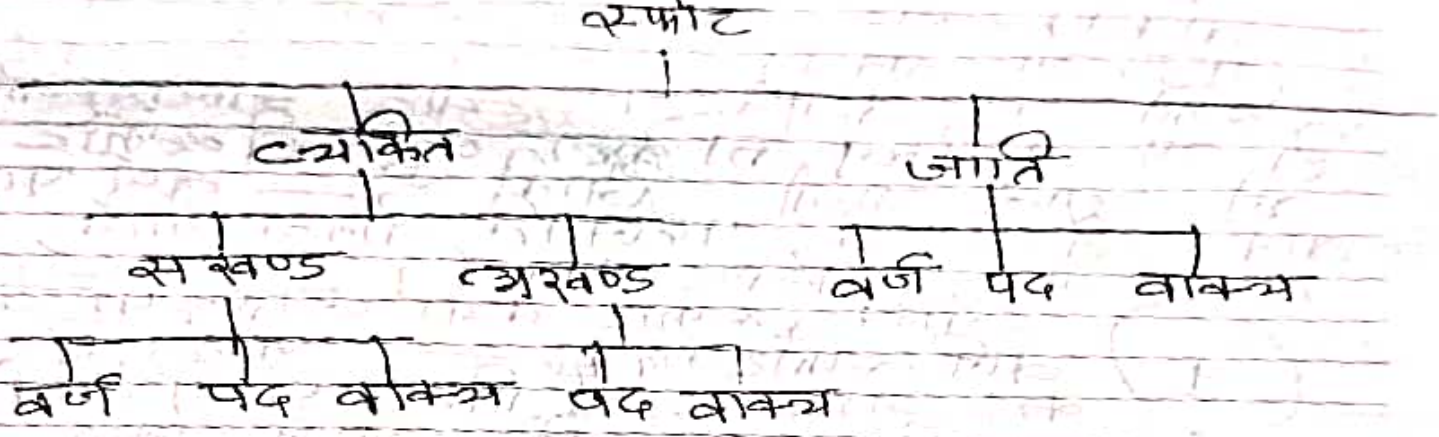

- स्फोट
  - व्यक्ति
    - सखण्ड
      - वर्ण
      - पद
      - वाक्य
    - अखण्ड
      - पद
      - वाक्य
  - जाति
    - वर्ण
    - पद
    - वाक्य

भट्टोजि दीक्षित भी मानते हैं कि स्फोट आठ प्रकार के हैं जिनमें पाँच व्यक्ति स्फोट की श्रेणी में आते हैं और तीन जाति स्फोट की श्रेणी में। अतएव मूल रूप से स्फोट दो ही प्रकार के हैं — (1). व्यक्ति (2) जाति।

व्यक्ति स्फोट के पाँच उपभेद हैं — (1) वर्ण स्फोट (2) पद स्फोट (3) वाक्य स्फोट (4) अखण्ड पद स्फोट (5) अखण्ड वाक्य स्फोट।

जाति स्फोट के तीन उपभेद हैं — (1) वर्ण जाति स्फोट (2) पद जाति स्फोट (3) वाक्य जाति स्फोट।

किन्तु नागेश ने व्यक्ति स्फोट का दो उपभेद माना है —

20 FRI FEB

(1) सखण्ड स्फोट और अखण्ड स्फोट। सखण्ड स्फोट के तीन (वर्ण, पद, वाक्य) और अखण्ड स्फोट के दो (पद और वाक्य) उपभेद किये गये हैं। स्फोट का वर्गीकरण चाहे नागेश का हो या भर्तृहरि का कुल आठ ही स्फोट की धारणा पायी जाती है — वर्ण, पद, वाक्य, वर्णजाति, पदजाति, वाक्य जाति, अखण्डपद, अखण्ड वाक्य। व्यक्ति स्फोट तथा जाति स्फोट

(1) वर्ण स्फोटवाद: मीमांसकों का मानना है कि वर्ण ही किसी शब्द के अर्थ को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। शब्द और वाक्य वर्णों से संघटित होते हैं। जैसे — वृक्ष पर कपि है। इस वाक्य में वृक्ष पर कपि, है शब्द पाये जाते हैं। ये शब्द क्रमशः व + ऋ + क्ष + अ + प + अ + र + क + अ + इ + प + अ + ह + ऐ वर्णों से निर्मित हैं। सभी वर्ण एक-एक कर उच्चारित होते हैं और अन्तिम वर्ण के उच्चारण के पश्चात् पूरे वाक्य का अर्थ बोध होता है। इस प्रकार स्फोट वर्ण में ही निहित रहता है। प्रत्येक वर्ण ही शब्द या स्फोट है। चूंकि वर्ण पूर्वापर क्रम से होते हैं। अतः क्रमबद्ध होकर ही वर्ण अर्थ प्रदान करते हैं। इस विचार को वर्ण स्फोटवाद कहा जाता है।

2015

अभिनवनाथ मिश्र ने अपनी पुस्तक "प्रत्यक्ष प्रमाणिकता" में कहा है कि बोलते हुए वर्ण हैं जो प्रतीत होकर सुना जाता है। वर्ण ही शब्दों और वाक्यों के अर्थ का आधार होता है अर्थात् वही स्फोट है। परन्तु एक समस्या है कि वर्णस्फोट को व्यक्ति स्फोट की श्रेणी में रखा जाय या जातिस्फोट की श्रेणी में।

मीमांसकों के अनुसार वर्णस्फोट व्यक्ति स्फोट है। इसलिए मीमांसकों द्वारा स्वीकार वर्ण व्यक्तिस्फोटवाद कहलाता है। ध्वनि के उतार-चढ़ाव और 'ग' पच्चीस बार उच्चारण करने के बाद भी 'ग' का पच्चीस अर्थ नहीं होता, वरन् उसका एक ही अर्थ होता है। इसलिए उसे वर्णव्यक्ति स्फोट कहा जाता है जो शब्द (स्फोट) को नित्य मानता है। अतः मीमांसकों का स्फोटवाद शब्दनित्यतावाद को वर्णव्यक्ति स्फोटवाद की संज्ञा देता है।

परन्तु नैयायिकों की मान्यता है कि वर्णस्फोट जाति स्फोट है, व्यक्ति स्फोट नहीं। उनके अनुसार प्रत्येक 'ग' में एक सामान्य तत्व पाया जाता है। वह सामान्य तत्व 'गत्व' है। जिस प्रकार संसार की सभी गायें, चाहे वह काली, उजली या चितकबरी, बूढ़ी हो चाहे नाटी या लम्बी या मझोली हो, को

'गाय' को कहा जाता है,
क्योंकि सत्तायुक्त गाय की जाति आकार
प्रकार, जैसा रूप में एक जाति से अलग,
प्रकार में, सींग, पूँछ आदि व्यक्तिगत
नियम है, रहता है। यह जाति कहलाती
(जाति) है। विभिन्न प्रकार की गायें होती हैं
अपनी जाति में अवस्थित हैं।
इसी प्रकार प्रत्येक 'ग' वर्ण की अपनी
जाति 'गत्व' का अस्तित्व है। विभिन्न
ध्वनि भेद और उच्चारण भेद हैं जो सभी
अपनी-अपनी जाति से सम्बद्ध होते हैं।
जैसे - 'क' की जाति 'कत्व', 'प' की जाति
'पत्व' और 'ग' की जाति 'गत्व' इत्यादि।
अतः वैयाकरणों का मानना है कि
वर्णस्फोट को 'व्यक्ति' की श्रेणी में
नहीं रखा जा सकता। वह 'जाति'
मात्र है। इस विचार को वर्णजाति-
स्फोटवाद कहा जाता है। क्योंकि
'ग', 'क', या 'ख' को एक ही जाति
'गत्व', 'कत्व', या 'खत्व' में समाविष्ट
करना, 'लाघव-न्याय' कहलाता है।
व्यक्ति और जातिस्फोट
के अन्तर्गत पद स्फोट और
वाक्य स्फोट भी आते हैं।
अतएव पद और वाक्य को
व्यक्ति की श्रेणी में रखा जाय
और या जाति की श्रेणी में —
यह समस्या भी है।
इस समस्या का भी समाधान

इसी प्रकार [illegible] किया गया है [illegible] लिए

प्रकार [illegible] को [illegible] जाति

के अनेक [illegible] की [illegible] का

[illegible] ध्यान [illegible] है।

[illegible] मीमांसकों के अनुसार

पद और वाक्य [illegible]

[illegible] पद [illegible]

[illegible]

[illegible] वाक्य [illegible] और [illegible]

[illegible] पद और वाक्य

[illegible] और [illegible] है। [illegible]

[illegible] वाक्य का उच्चारण [illegible]

[illegible] उच्चारण [illegible]

[illegible]

[illegible] किया जाता [illegible]

[illegible] इसी प्रकार [illegible] और [illegible]

पद का [illegible] दोनों पदों का उच्चारण [illegible]

[illegible] होने पर [illegible] वाक्य बनता है [illegible]

[illegible] वाक्य का [illegible] है

[illegible] पक्ष [illegible] और [illegible]

दोनों को [illegible] की [illegible]

25

[illegible]

... पद है, ... [illegible]

... का अर्थ ... [illegible]

... लिखा गया है। यदि 'शिव' पद में (इ) निकाल दिया जाय, तो शिव शव (शक्ति-न विहीन) बन जाता है। तात्पर्य यह है कि कोई भी पद और वाक्य को अर्थवान

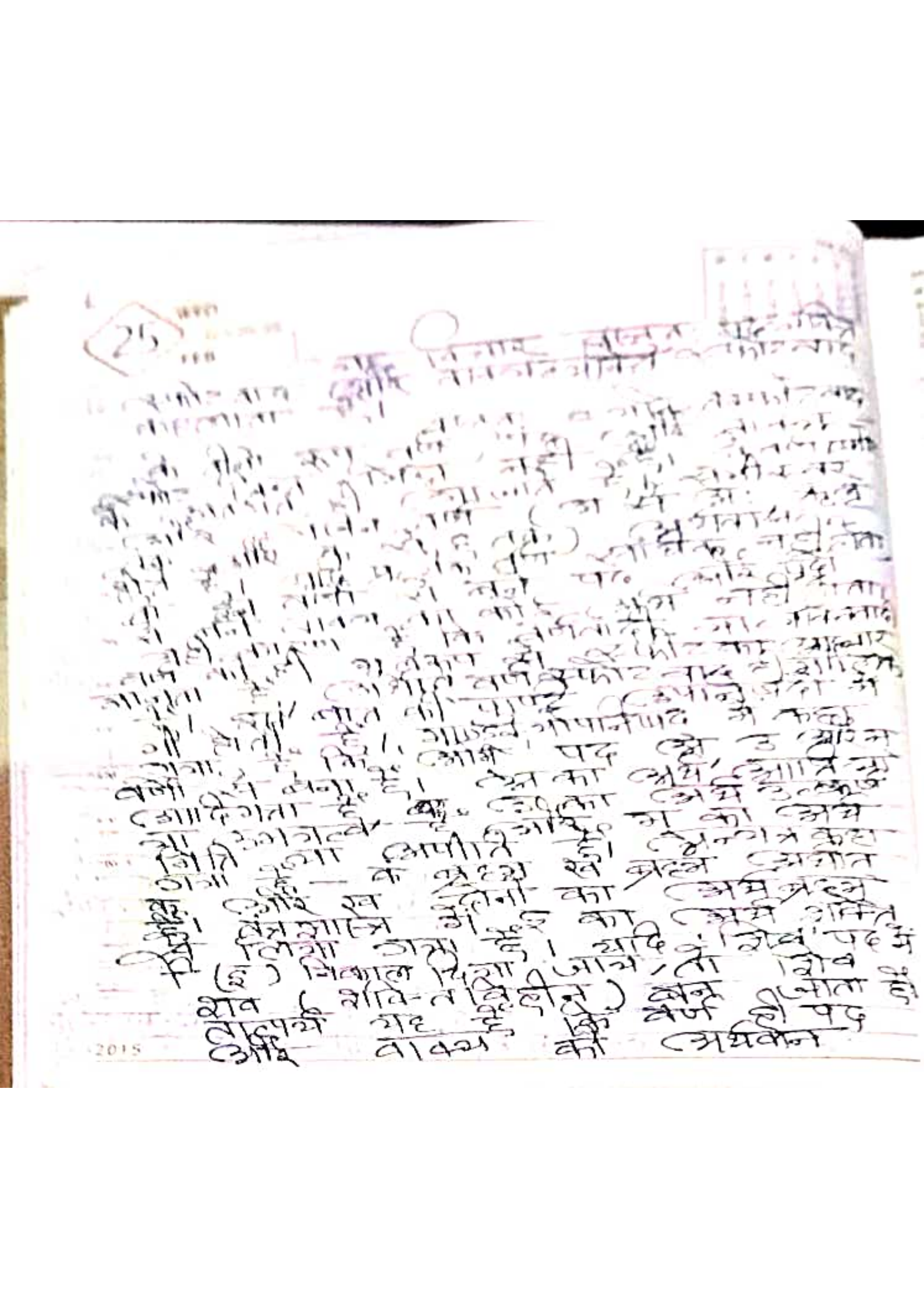

[illegible]

[illegible] आज [illegible] अभिमत [illegible]

कारण पदस्थो [illegible] और [illegible]

की क्रमशः पदजाति स्फोट और
वाक्य जाति स्फोट कहा जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से एक बात स्पष्ट होती है कि स्फोट यद्यपि कोटियाँ अनेक हैं फिर भी मूल स्फोट तीन ही है — वर्ण, पद और वाक्य। अतएव वैयाकरण ग्रन्थों में सामान्यतः इन तीन स्फोटों की ही चर्चा होती है। वर्ण स्फोट और पद स्फोट के अन्तर को इन शब्दों में दिखलाया जा सकता है।

वर्ण स्फोट तथा पद स्फोट — ऊपर की पंक्तियों में बतलाया गया है कि वर्ण ही अर्थ बोधक है। अकेला वर्ण अर्थ प्रदान करने में सक्षम है यह प्रमाण शास्त्रों से मिलता है। परन्तु व्यवहार में ऐसे वर्ण पाये जाते हैं जो अकेले अर्थ प्रदान करने में असमर्थ हैं। घ और ट अलग-अलग वर्ण हैं। जबतक ये परस्पर नहीं मिलते हैं तब तक ये कोई अर्थ प्रदान नहीं करते / पाते हैं। यद्यपि ये अभिधान हैं। जब दोनों वर्ण क्रमशः मिलकर 'घट' शब्द बनाते हैं तो इस शब्द का अर्थबोध होता है। जब दोनों वर्ण क्रमशः मिलकर 'घट' शब्द बनाते हैं तो इस शब्द का अर्थबोध होता है। यदि इन वर्णों में अर्थ प्रदान करने की क्षमता

[illegible]

होता है, ... पूरा ... नहीं रहता। जैसे ही ... वर्ण से अर्थ की अभिव्यक्ति होना असम्भव है। परन्तु ... बात को ... जाता है कि वस्तुतः पूर्व पूर्व उच्चारित वर्ण स्मृति में ... अंतिम वर्ण उच्चारित होकर स्मृति में पहुँचती है तो सभी उच्चारित वर्ण परस्पर मिलकर अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं। ... संस्कार परम्परा से अर्थ का बोध होता है।

यदि वर्ण ही अर्थाभिव्यक्ति का माध्यम है और शब्द वर्णों का समुच्चय मात्र है तो समान वर्णों से निर्मित शब्दों का अर्थ भी एक होना चाहिए। परन्तु व्यवहार में हम पाते हैं कि इनके अर्थ अलग अलग होते हैं। जैसे पिक, कपि, सर, रस आदि। पिक का अर्थ कोयल है, तो कपि का अर्थ बन्दर है। सर का अर्थ तालाब है, तो रस का अर्थ [illegible] आदि है। इस समस्या का उत्तर [illegible] दिया गया है कि समान वर्णों से निर्मित शब्दों का

18

02 MON MAR

अलग - अलग अर्थ [illegible] वाला भी
वर्ण - समन्वय के कारण होता है। सर और
रस में अलग - अलग अर्थ। फिर 'र' और 'स'
स्वर को पहले 'स' को पहले रखने से [illegible]
जानकर कुछ भी पहले रखने से [illegible] अर्थ
आता है। इसी तरह पा + इ + क
वर्ण समन्वय 'पाइक' है। इस प्रकार
और क + इ + प है। इस प्रकार वर्णस्फोट
वादी शब्द की अवयवशक्ति को [illegible]
का आधार मानते हैं। वर्ण [illegible] आघातकी
अवयव है। अवयव शक्ति के आधार
को ही अभिव्यक्ति मानने के कारण
वर्ण स्फोटवाद सावयव स्फोटवाद भी
कहलाता है। परन्तु पदस्फोट वाक्यस्फोट
को अभिव्यक्ति की संज्ञा नहीं देते।
पदस्फोटवादी शब्दों में स्वीकारते
हैं कि वाक्य की रचना पदों से होती है
परन्तु अर्थ वर्णों की अवयव शक्ति से नहीं
होता। करन समुदाय शक्ति से होता है। जैसे
में मोहित शीक [illegible] / अर्थ प्रदान करती
हैं। अब इन शब्दों का क्रमबद्ध उच्चारण
होता है, तो इनके अवयव [illegible]
प, इ, क अलग - अलग उच्चरित होकर
स्मृति में आते हैं। किन्तु ये स्मृति में
स्वतः परस्पर सम्बद्ध नहीं होते।
पात हमारी बुद्धि उन्हें [illegible]
करती है और [illegible]
तभी सम्बद्ध कर सकती है [illegible]
2015 इनमें समुदाय शक्ति ही अन्तस्थ अर्थ

का आधार वर्णों की समुदायशक्ति अथवा शब्दशक्ति है। पद से शब्द से ही अर्थ अभिव्यक्त होता है। जिस तरह किसी हाथी को बाँधने के लिए रस्सी की जरूरत होती है, रस्सी के अवयव पुआल की नहीं। जब पुआलों से रस्सी बँधती है उन पुआलों से एक एक पुआल लेकर हाथी को बाँधना असम्भव है। हाथी बाँधने के लिए पुआलों से बनी एक रस्सी ही आवश्यक है। इसी प्रकार वर्णों की अवयव शक्ति अर्थ प्रदान करने में सक्षम नहीं है, वरन उसकी समुदायशक्ति ही अर्थ प्रदान करने की सामर्थ्य रखती है। पानी घट में भरा जाता है न कि उसके अवयव मिट्टी में। स्पष्ट है कि पदस्फोटवाद पद को ही अर्थशक्ति या स्फोट मानता है।

सखण्ड और अखण्ड स्फोट: ध्वनित स्फोट के दो रूप माने गये हैं सखण्ड और अखण्ड। सखण्ड स्फोट वह है जिसके अवयव होते हैं और वे अवयव वर्ण, पद तथा वाक्य के रूप में होते हैं। जिन वाक्यों का हम दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं, वे वाक्य पदों से बनते हैं और पद वर्णों से जैसे – "घट लाओ" वाक्य में घ ट तथा ल आ ओ वर्ण एक साथ जुड़े हैं। जिनसे 'घट' पद और 'लाओ' पद बने हैं। घटपद

संज्ञावाचक है, तो 'गा' भी क्रियावाचक पद है। इस प्रकार इस वाक्य के क्रम से 'घर' (वह वस्तुजात) के दो अवयव हैं और 'गाओ' (वह क्रिया) होना है। और जिसके द्वारा वस्तु, गायी जाती है। 'घर' शब्द में 'अ' प्रत्यय जोड़कर बनता है। इसी प्रकार से 'गा' धातु शब्द में 'ओ' उपसर्ग के साथ 'आनय' ... अतः वाक्य में धातु लगा रहता है के दोनों पद आनय (घर, गाओ) विभक्ति (उपसर्ग तथा प्रत्यय) धातु और विभक्ति के मेल से बनते हैं। अतः पद के अवयव धातु और विभक्ति हैं। इस प्रकार व्यवहार में हम जिन वाक्यों का प्रयोग करते हैं वे सावयव होते हैं। अतः इन वाक्यों के अर्थ या स्फोट सखण्ड कहलाते हैं। इनके अवयवों के आधार पर कारावाचक का आश्रय लिया पाता है। इसी दृष्टि से वर्ण, पद और वाक्य के रूप में सखण्ड स्फोट को विभाजन किया जाता है। वस्तुतः सखण्ड स्फोट को इस होता है यह व्यवहारिक स्फोट है। यही कारण है कि व्यवहार में इस स्फोट को वास्तविक नहीं माना है। वास्तविक स्फोट अखण्ड स्फोट है।

अखण्ड स्फोटवाद के अनुसार वाक्य या स्फोट निरवयव मात्र होता है और वर्ण और पदों में विभाजित करने की आवश्यकता ही नहीं है। वाक्य एक सम्पूर्ण

इकाई है और इकाई
अनुरूप में प्रतीत होता विभाजन वह अक्रम
है। फिर भी वैयाकरणों ने आनुमिक
वर्ण और पद के रूप में वाक्य का
विभाजित किया है। नागेश ने दो स्थिति का मानना है कि
ही वस्तुतः वर्ण और पद भी स्फोट मात्र
हैं क्योंकि वाक्य की अभिव्यंजना
इनके बिना नहीं हो सकती। मूलतः
वाक्य एक और अखण्ड इकाई है
इसलिए इसे 'वर्णातिरिक्त' कहा जाता
है। वर्ण पद और वाक्य दोनों के
व्यंजक होते हैं। वस्तुतः पद या वाक्य
वर्ण समूह नहीं है, जो वर्ण संयोजित
पदों या वाक्यों के अर्थ होते हैं और
अर्थ एक ही होता है। ककार आदि
वर्ण वस्तुतः स्फोट ही हैं। ध्वनियाँ
व्यंजक हैं। ये उपाधि हैं। अथवा
स्फोट के अतिरिक्त कोई वर्ण नहीं
है। दूसरे शब्दों में वर्णस्फोट या
पदस्फोट की बात तो व्यावहारिक दृष्टिकोण
से रखी कार्य है, पर वास्तविकता यही
आशय के प्राधान्य को। ये वर्णस्फोट
और पदस्फोट वाक्यस्फोट में ही समाहित
है। अतः मूल रूप में स्फोट मात्र
वाक्य ही है। यही कारण है कि
वैयाकरणों ने स्फोट को सदैव
एक और अखण्ड माना है। जिसकी
अभिव्यंजना वर्णों और
पदों से होती है। वाक्य
उसके अवयव (वर्ण, पद) में और

06 FRI MAR

पाया जाता है। लोक व्यवहार की दृष्टि से
वाचन प्रस्तुत सामाजिक
दृष्टि से इनमें ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण
जानकारी बहुत निरवगत हैं।